# पहला अध्याय

## ममता कालिया : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अ) जीवनी

ब) व्यक्तित्व

क) कृतित्व

निष्कर्ष —

## पहला अध्याय

### ममता कालिया : व्यक्तित्व एवं कृतित्व --

साहित्य और समाज का अटूट सम्बन्ध है। साहित्य के बिना समाज का अस्तित्व संभव हो सकता है किन्तु समाज के बिना साहित्य की निर्मिति असंभव है और इस समाज के अस्तित्व के दो महत्वपूर्ण अंग है - नारी और पुरुष। इन्हीं के कारण मानव जाति का अस्तित्व है। समानता के आज के युग में यह स्वीकार किया गया है कि पुरुष की तरह नारी भी समाज का महत्वपूर्ण अंग है।

साहित्य में प्राचीन समय से ही नारी की प्रतिष्ठा रही है। इस देश में आदि कवि वाल्मीकि से लेकर आज तक बराबर नारी का चित्रण साहित्यकार करते आये हैं। आरम्भिक काल में प्राय: पुरुषों ने ही स्त्रियों के बारे में लिखा है। लेकिन यह सर्वस्वीकृत है कि, पुरुष स्त्री की आंतरिकता को उतनी गहराईसे कभी नहीं समझ सकता, जितना कि एक अदद स्त्री। इसी कारण साठोत्तरी साहित्य में महिला लेखिकाओं की बाढ़-सी आ गयी, जिसमें शिवानी, मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, मेहरुन्निसा परवेज, कृष्णा सोबती और ममता कालिया के नाम गिने जा सकते हैं। इन्होंने नारी के विभिन्न पहलुओंपर प्रकाश डाला है। उन्होंने आज की नारी की समस्याओं को हमारे सामने रखा। अन्य

लेखिकाओं की तरह नारी जीवन का चित्रण करते हुए ममता कालिया ने इन सबसे अपना अलग स्थान सुनिश्चित किया है।

ममता कालिया साठोत्तर महिला कहानीकारों में प्रमुख हैं। कथा, कविता, उपन्यास, बाल-साहित्य, नाटय-संग्रह आदि साहित्य के अंगों को अपनी लेखनी से प्रभावित किया है।

समकालिन सामाजिक यथार्थ को सहज और विश्वसनीय भाषा-शैली में अभिव्यक्त करने के लिये वे प्रसिध्द हैं। ममता कालिया स्पष्ट और निर्भिक दृष्टि की लेखिका हैं। इनकी कहानियों में दिखाव नहीं है। पुरुष के समानांतर नारी का स्थान बनाने का उनका आस्थापूर्ण प्रयत्न रहता है। घर की चार दीवारी में कैद नारी की मुक्ति की आकांक्षा और उसका संघर्ष इनकी अधिकांश कहानियोंका केन्द्र बिंदू है। नौकरीपेशा नारी की छटपटाहट, सामाजिक रुढ़ियोंमें बँधी नारी अथवा पुरुषसत्ताक समाज में कसमसाती नारी का सूक्ष्म वर्णन करनेमें ममता निपुण है। ममताजी ने नारी जीवन के विविध पहलूओं को आधुनिक स्थितियोंकी रोशनी में सूक्ष्मतासे पहचाना है। अतिशय भावुकता उनकी कहानियों में नहीं किंतु उसका बहिष्कार भी नहीं। जीवन के छोटे-छोटे संवेदनात्मक क्षणों को उन्होंने बड़ी खूब सुरतीसे पकड़ा है। वे नारी का विचलित होना भी बड़ी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त करती हैं। वे नारी को आदर्श के आवरण के साथ नहीं ढंकना चाहती, इसके कारण ही उसकी भौतिक आवश्यकताओं की भी वे हिमायत करती हैं। तभी तो आलोचक उनको 'बोल्ड' लेखिका होने का फतवा देते है।

आर्थिक दबाव, मँहगाई तथा पारिवारिक उन्नति के लिये घर की चार दीवारी छोड़कर, पुरुष के साथ कन्धेसे कन्धा मिलाकर वह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत है। नारी की अर्जनक्षमता पुरुषवर्ग की श्रेष्ठता को साफ-साफ चुनौती देती है। लेकिन अर्जिका नारी को कई तरह की मुश्किलों से गुजरना भी पड़ता है, साथ ही उसे भीतर और बाहरसे बहुत टूटना भी पड़ता है। उसकी

मानसिक स्थिति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, प्रेम आदि के सम्बन्ध में बहुत परिवर्तन हुआ है। सुबहसे-शामतक नौकरी की झीक-झीक में मर-खपकर जब वह घर लौटती है तो उसे अनेक पारिवारिक दायित्व निभाने पड़ते हैं। पतिसे लेकर बच्चों तक और मौं-बाप, भाई-बहन, सास-ससुर, ननद-देवर सभी की उससे अतिरिक्त अपेक्षाएँ हैं, किंतु उसकी अपेक्षाओं की ओर, आकांक्षाओंकी ओर ध्यान रखनेवाला कोई नहीं। विवाह के पहले नौकरीशुदा नारी को अपने परिवार के लिए तो विवाह के पश्चात् अपने पति के परिवार के लिए तिल-तिल गलना पड़ता है। सबको संतुष्ट करना ही उसका धर्म है। घर और दफ्तर या काम की अन्य जगहों में विभिन्न प्रकारके जो मानसिक संघर्ष झेलने पड़ते हैं। उसका सही चित्रण ममताजी ने अपनी सहज व्यंग्यात्मक, कवित्वपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया है। आकाशवाणी और दूरदर्शन से इनकी अनेक रचनाएँ प्रसारित हो चुकी हैं।

हिंदी साहित्य की ऐसी जेष्ठ-श्रेष्ठ लेखिका को संपूर्णरूपसे जानने के लिए हमें उनके जीवन के एक-एक पहलुओंको देखना आवश्यक है।

(अ) जीवनी --

(१) जन्म एवं परिवार तथा शिक्षा - दीक्षा --

ममता कालिया का जन्म संपन्न परिवार में २ नवम्बर, १९४० को वृंदावन के मिशन अस्पताल में हुआ। उनकी पढ़ाई बंबई, पूना, इंदौर और दिल्ली जैसे शहरों में हुई है। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए.की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद दौलतराम कॉलेज, दिल्ली और श्रीमती नाथीबाई ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय, बंबई में प्राध्यापक की हैसियतसे काम किया। आज-कल इलाहाबाद में महिला सेवासदन डिग्री कॉलेज की प्राचार्या पद पर वे कार्यरत हैं। बचपन में ममताजी चेचक, काली खाँसी जैसे रोगों से बीमार रही थी। बचपन में दो साल की उम्र में चेचक, काली खाँसी और गर्दन-तोड़-बुखार जैसे जानलेवा रोगोंसे लड़ाई मोल ली। तभीसे एक लड़ंत व्यक्तित्व उनमें तैयार हो गया। विषम-से-

विषम स्थितियों में सम रह सकने के लिए लेखन एक निहायत जरूरी कोशिश।[1]

(२) साहित्य-सृजन का प्रारंभ --

सन् १९६० मे बी.ए.में पढ़ते वक्त उन्होंने कविता लिखना शुरु किया। यहीं से उनके साहित्य-सृजन का प्रारंभ माना जाता है। इसी वर्ष इनकी पहली रचना प्रकाशित हुई। 'कहानी' मासिक द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता में उनकी 'उपलब्धि' शीर्षक कहानी को प्रथम पुरस्कार मिला।

इनकी प्रथम उल्लेखनीय कहानी 'यों ही मर जायेंगे', 'ज्ञानोदय' पत्रिका के जनवरी, सन् १९६४ के अंक में प्रकाशित हुई। अब भी उनकी कहानियाँ 'सारिका' पत्रिका में प्रकाशित होती रहती हैं।

ममता जी ने कथा-साहित्य के अलावा अन्य विधाओं में भी लेखन किया है जैसे कविता, कथा, उपन्यास, बाल-साहित्य, नाटय-साहित्य। उन्होंने समकालीन सामाजिक यथार्थ को, अपनी लेखनी से सहज और विश्वसनीय भाषा-शैली में उतारकर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। अंग्रेजी, जर्मन, जापानी के अलावा प्राय: सभी भारतीय भाषाओं में उनके कहानियों के अनुवाद हुये हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन से अनेक रचनाएँ प्रकाशित, प्रसारित हो चुकी हैं।

(३) जीविका --

इलाहाबाद में महिला सेवासदन डिग्री कॉलेज की प्राचार्या पद पर कार्यरत हैं।

---

१ प्रतिदिन - ममता कालिया - फ्लैप से उद्धृत।

(४) विवाह --

ममता जी का विवाह हिंदी के जाने-माने साहित्यकार रवींद्र कालिया से १२ दिसम्बर, १९६४ को हुआ है। रवीन्द्र कालिया जी ने पंजाब विश्व विद्यालय, चंडीगढ से हिंदी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की है। वे रणधीर राजकीय डिग्री कॉलेज, कपूरथला एवं दयानंद डिग्री कॉलेज, हिसार में अध्यापन का काम करते हैं। पत्रकारिता ( हिंदी मिलाप, भाषा, धर्मयुग ) के बाद वे पापी पेट के लिए छापखाने का कारोबार भी सँभालते हैं। शायद इसी स्थिति के कारण ममता भी नौकरी करती है ऐसा रवीन्द्र जी का कहना है। रवींन्द्र जी की मातृ-भाषा पंजाबी है और ममता जी की हिंदी।

(५) पारिवारिक जीवन --

ममता जी का पारिवारिक जीवन सुखमय है। इनके दो बच्चे हैं -- अनिरुध्द और प्रबुध्द। अपने बेटे अनिरुध्द ( अन्नू ) के प्रति वे भावुक दिखायी देती हैं, क्योंकि इसके बारेमें उन्होंने डॉ.साधना शाह से कहा है कि " वेदना होगी तो मुझे केवल " अन्नू " के बारे में होगी और किसी के बारे में नहीं होगी।[१] " अपने इस छोटे से परिवार के बाद ही वे लेखन को महत्व देती है इसका प्रमाण हमें इस वाक्य से मिलता है -- " मैं पहले एक गृहिणी हूँ, उसके बाद मैं एक शिक्षिका हूँ और तीसरे दर्जे पर मेरा लेखन आता है। चाहे मैं इसे पहले दर्जेपर रखना चाहूँ लेकिन मेरे जीवन की जो अनिवार्यताएँ हैं, उसके अनुसार यह तीसरे दर्जेपर ही आता है।"[२] इससे यही सिध्द होता है कि अपने परिवार को सँभाल कर ही वे लेखन करती हैं। अपनी पारिवारिक स्थिति तथा रवीन्द्र जी के बारे में ममता जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए स्वयं कहा है -- "

(१) रवि मेरे लेखन के प्रति बड़ा ठंडा दृष्टिकोन अपनाये रहते हैं। मुझे शक है इस आदमीने मेरी कोई भी रचना कभी भी पढ़ी होगी। जब मेरे उपन्यासोंपर पाठकों के पत्र आते हैं तो ये ताज्जुब करते हैं कि, क्या ये किताबें

---

१ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ.साधना शाह-पृ.१५० ।

२ - वही - ,, पृ.१४९ ।

पाठ्यक्रम में लगी थीं जो उन्हें पढ़नी पड़ गयी।

(२) रवि ने बेटे को कुछ भयानक गालियाँ सिखा रखी हैं और हमारी नौकरानी अपने बच्चों को साथ नहीं लाती, क्योंकि बच्चे अन्नू से गालियाँ सीखते हैं।

(३) रवि कभी सिनेमा नहीं दिखाते।

(४) रवि कभी शॉपिंग नहीं करते। जब हमारे कपड़े तार-तार हो जाते हैं तो हम दोनों के हमवर्द घरवाले कपड़े सिलवाते हैं। रुचि, विचार व जीने के ढ़ब में ममता जी और रवीन्द्र जी इनमें अंतर है। ममता जी कहती है -- ' दर असल रुचि, विचार व जीने के ढ़ब में हम दोनों दो ध्रुव हैं। यही शायद हमारे विवाह की रिकार्ड तोड़ सफलता ( चश्मे बद्दूर ) का राज भी है।'[१] इसी के आधार पर हम कह सकते हैं कि ममताजी अपने पारिवारिक जीवन में सुखी हैं। ममताजी के कथा लेखन के बारेमें रवीन्द्र जी कहते हैं -- ' ममता तो जहाँ कहानी लिखती है, वहाँ नीचे धोबी का हिसाब भी लिख लेती है, और उसे कोई रेसिपी भी मिली है -- कोई चीज बनाने को तो वह भी लिख लेती यह सब साथ चलता है।'[२] इस व्यस्तता का परिणाम उनके कहानी लेखन पर नहीं पड़ता। यह बात माननीही पडेगी कि ममता कालिया अपने श्रेष्ठतम कहानियों द्वारा अपने मेधावी बुध्दिका परिचय देती है।

(६) वर्तमान स्थिति --

साठोत्तरी महिला कहानीकारों में ममता कालिया प्रमुख कहानीकार हैं। वे अध्यापन का कार्य बड़ी सफलतासे कर रही हैं। आज-कल वे इलाहाबाद में महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज की प्राचार्या पद पर कार्यरत हैं। ममता जी निरंतर लिखना चाहती है। इस बारे में उन्होंने डॉ.साधना शाह के सामने अपने विचारोंको स्पष्ट करते हुए कहा है कि ' बहुत दिन तक न लिखें तो मूड जरुर खराब रहता है।

---

१ गली-कूचे - रवीन्द्र कालिया - भूमिका से उद्धृत।

२ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ.साधना शाह - पृ.१४६।

हरेक के ऊपर झुंझलाहट आती है, लगता है कि हर बात एक अड़चन है, लिखने में कोई भी व्यस्तता चाहे घर की हो, कॉलेज की हो, उसके ऊपर झुंझलाहट जरूर आती है। अक्सर यह होता है मेरे साथ कि बहुत दिनों तक न लिखूँ तो वह झुंझलाहट भी समाप्त हो जाती है और जड़तावाला स्थगन आ जाता है, जो कि लेखक के लिये बहुत घातक होता है।"[१] इसी कारण आज भी वे लिखती रहती हैं। उनकी ये कहानियाँ 'सारिका' और 'धर्मयुग' कहानी पत्रिका में प्रकाशित होती है।

(ब) व्यक्तित्व --

सन् १९६० के बाद हिंदी साहित्य क्षितिज पर महिला लेखिकाओं की बाढ-सी आ गयी। इन लेखिकाओंने अपने साहित्य के-जरिये नारी वर्ग की पीड़ा और घुटन का चित्रण करना अपना लक्ष्य बनाया। महिला साहित्यकारों की बाढ़ के पूर्व हिंदी साहित्य में किया गया चित्रण एकांगी था। पुरुष की कलम और निगाह से जो नारी सन् ६० के पूर्व हिंदी साहित्य में प्रतिबिंबित हुई थी, उस नारी चित्रण के अधुरेपन की खाई को काटने का जी-तोड़ प्रयास सन् ६० के बाद के महिला साहित्यकारोंने किया। इस चित्रण को भी सर्वांश कहना अतिशयोक्त होगा, क्योंकि सन् ६० की बाद की महिला साहित्यकारों ने अपने सीमित, सामाजिक, आर्थिक और सांसारिक अनुभवों के दायरे में चित्रण किया। इस प्रयास में सन् ६० के बाद की महिला साहित्यकारों के, लेखन का केन्द्र महानगर रहा। क्षेत्र सीमित रहने के कारण चित्र भी सीमित और संकीर्ण रहे। महिला साहित्यकार कथाकार के रुप में उभरी जिन्होंने प्रमुख रुपसे कहानी विधा को अपनी अभिव्यक्ति का साधन चुना। परंतु इस समय कुछ ऐसे महिला साहित्यकार हिंदी साहित्य के प्रांगण में आये जिनका वर्णन बहुमुखी साहित्यकार या संपूर्ण साहित्यकार के रुपमें किया जायेगा। ऐसेही साहित्यकारों में उल्लेखनीय हैं -- ममता कालिया।

---

१ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ.साधना शाह - पृ.१५०।

ममता कालिया हिंदी साहित्य के प्रांगण में कथाकार के रुप में आयी। परंतु धीरे-धीरे उन्होंने कहानी के अलावा उपन्यास,कविता,बाल-साहित्य,नाटक आदि क्षेत्रों में भी लेखनकर अपने साहित्यकार की समग्रता प्रदान की। उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को सूक्ष्मरुपसे जानने के लिए उनके साहित्यकार के विभिन्न पहलुओं को जानना जरुरी है।

कवयित्री --

सन् १९६० में बी.ए. में पढ़ते वक्त कविता लिखकर ममताजी ने साहित्य-सृजन का प्रारंभ किया। ' ए ट्रिब्युट टू पापा अॅण्ड अदर पोयमस् ' यह उनका कविता-संग्रह है, जो सन् १९७८ में प्रकाशित हो चुका है। कविता में अपने विचारों को विस्तृत से न रख सकने के कारण उन्होंने इस क्षेत्र को छोड़सा दिया। इस बारे में अपने विचार प्रकट करते हुये ममताजी ने स्वयं डॉ.साधना शाह से कहा है -- ' मैं शुरु में कविता लिखती थी लेकिन मैंने पाया कि कविता इतनी संक्षिप्त होती जा रही है और वह नारों के साथ इस तरह जुड़ती जा रही है कि उसको किसी भी तरह से सार्थक रुप में कायम रखना संभव नहीं है।'[१] लेकिन फिर भी वे अपने कवि मन को छुपा नहीं पाती। उनके कवि व्यक्तित्व की छाप उनकी कई कहानियों में दिखायी देती है।

कथा लेखिका --

साहित्य के क्षेत्र में कविता लिखकर ममताजी ने पदार्पण किया,फिर भी कवयित्री की अपेक्षा वे कथा लेखिका के रुप में ही बहुचर्चित हैं। पढ़ाई के कारण बॅंक्स,पूना,इंदौर और दिल्ली जैसे शहरों में घूमना पडा, जिससे वे महानगरीय जीवन से , वहाँ की नौकरी पेशा नारी की समस्याओं,तकलिफोंसे परिचित हो गयी। अपने इन अनुभवों को अभिव्यक्त करने के लिये ममताजी ने कहानी जैसी सशक्त विधा को चुना। इस बारे में उन्होंने डॉ.साधना शाह को

---

१ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ.साधना शाह - पृ.१४९।

बताया था कि ' कहानी विधा सबसे अधिक फ्लेक्सिबल विधा है। बहुत अच्छी तरह उसमें विस्तार किया जा सकता है और संदोपण भी किया जा सकता है। उस विधा में तीनों आयाम अपना पूरा विकास पा जाते हैं।'[१] ममता कालिया ने विषम से विषम स्थिति में सम रह सकने के लिये लेखन एक निहायत जरुरी कोशिश मानकर लिखना शुरु किया। सन् १९६० को इनकी पहली कहानी प्रकाशित हुई। ' कहानी ' मासिक द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता में उनकी ' उपलब्धि ' शीर्षक कहानी को प्रथम पुरस्कार मिला। यह कहानी ' सीट नम्बर बारह ' कहानी संग्रह में संग्रहित है। वह कहानी ' श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ ७६ ' इस संग्रह के लिये भी चुनी गयी है। ' उपलब्धि ' कहानी की तरह ही इनकी और एक उल्लेखनीय कहानी है - ' यों ही मर जायेंगे ' , जो ' ज्ञानोदय ' के जनवरी १९६४ के अंक में प्रकाशित हुई थी। अपनी कहानियों की सफलता देखकर ममता जी आगे लिखती ही गयीं। इनके कथा संग्रह निम्नांकित हैं ---

| | रचना | | प्रकाशन वर्ष |
|---|---|---|---|
| १. | बुटकारा | - | चतुर्थ संस्करण १९८३ |
| २. | सीट नम्बर बारह | - | १९७८ |
| ३. | एक अदद औरत | - | १९७९ (अप्राप्त ) |
| ४. | प्रतिदिन | - | १९८३ |
| ५. | उनका यौवन | - | अप्राप्त |

(१) बुटकारा - ( चतुर्थ संस्करण १९८३ ) --

' बुटकारा ' यह इनका पहला कहानी-संग्रह है। इसमें कुल चौदह कहानियाँ संग्रहित की गयी हैं। इसमे नारी के अंतर्मन की पीड़ा को, व्यथा को

---

१ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ.साधना शाह - पृ.१४९।

अंतर्भूत किया गया है। इसमें यह बताने की कोशिश की गयी है कि जीवन को जितनी गहराई और संवेदना तथा जिस तीव्रतासे औरत जीती है शायद उस तीव्रता तक पुरुष पहुँच ही नहीं सकता, क्योंकि वह पुरुष है। इस संग्रह में उन्होंने नारी को आधुनिक रुपमें प्रस्तुत किया है, जो भारतीय नारी के पारंपारिक मर्यादाओंसे बिलकुल भिन्न है। इस संग्रह की नारी इतनी आधुनिक है कि वह विवाह को एक मिनिंगलेस रस्म मानती है। और इसी वजहसे वह विवाह बिना ही पुरुष के साथ पत्नी की तरह रहती है। शरीर सुख की माँग करने में भी वह नहीं हिचकिचाती। नारी का यह विचलित होना भी वह स्वस्थ दृष्टिकोन से प्रस्तुत करती है।

(२) सीट नम्बर छह ( १९७८ ) --

`छुटकारा` इस कहानी संग्रह के बाद उन्होंने अपना अगला कहानी संग्रह `सीट नम्बर छह` लिखा जो सन् १९७८ में प्रकाशित हुआ, इसे भी पाठकों ने सराहा। पाठकों के दिल को सहज छू लेने वाली उनकी भाषा-शैली के कारण विषय एक होकर भी याने नारी केन्द्रित होकर भी इस संग्रह की कहानियाँ अलग लगती हैं। विविध शोषण से युक्त नारी की लाचारी, पुरुष समाज की ओरसे उसे मिलनेवाली अवहेलना, तोहमत, डाँट-फटकार आदि का सही और यथार्थ रुप इसमें दिखाई देता है। इस कुंठाग्रस्त, अभावग्रस्त कशमकश से भरी जिंदगी में जी रही पढी-लिखी युवतियोंकी मानसिकता तथा उनकी समस्याओंका इस कहानी संग्रह में यथार्थपरक अंकन हुआ है। `सीट नम्बर छह` की कहानियों पर टिप्पणी करते हुए मधुरेशने लिखा है -- `ये पढ़ी-लिखी युवती की मानसिकता और उसे लेकर सामाजिक प्रतिक्रियाओंपर अपने को अधिकांश में केन्द्रित करती हैं।`[१] और वह सच भी है।

(३) एक अदद औरत ( १९७९ ) --

`एक अदद औरत` यह कहानी संग्रह है सन् १९७९ में प्रकाशित हुआ।

---

१ हिंदी कहानी के सौ वर्ष -- डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ - पृ.९६।

इसमें स्त्री के प्रति समाज के उपभोगवादी दृष्टिकोन को ममताजी ने सामने लाया है। जैसे कोई अखबारवाला पुलीस का वर्चस्व बरदाश्त नहीं करता उसी प्रकार स्त्री की सेवाओंका वर्चस्व पुरुष स्वीकार नहीं कर सकता। हमारे समाज में नारी के साथ एक जानवरसे भी बदतर व्यवहार किया जाता है। नारी शोषण करने में पुरुष के साथ-साथ स्त्री भी अग्रसर है। नारी के विरुध्द नारी का यह रवैया पुरुष सत्ताक समाज की सबसे बड़ी सफलता है। इसमें व्यंग्य और करुणा के सहारे युगीन अंतर्विरोधों को समर्थ और चुटीली भाषाद्वारा अभिव्यक्ति मिली है।

(४) प्रतिदिन - ( १९८३ ) --

`प्रतिदिन` यह कहानी संग्रह १९८३ में प्रकाशित हुआ। ममताजी की बंबई, पूना, इंदौर और दिल्ली जैसे शहरों में पढ़ाई होने के कारण वे महानगरीय जीवनसे अभ्यस्त थीं। इसी कारण `प्रतिदिन` कहानी संग्रह में, खासकर मध्यवर्गीय नौकरीपेशा नारी की समस्याओंका उल्लेख मिलता है। इसमें शिक्षित मध्यवर्गीय नारी की आशाओं, आकांक्षाओंका, संघर्षों और स्वप्नोंका यथार्थपरक अंकन हुआ है। इस संग्रह की कहानियाँ भारतीय नारी के संघर्ष और उसकी छटपटा--हट को मार्मिक प्रसंगों के माध्यम से उद्घाटित करती हैं।

ममताजी के उपयुक्त कहानी संग्रह देखनेपर एक बात स्पष्ट होती है कि उनके लेखन का विषय नारी केन्द्रित ही है। उन्होंने नारी समस्याओंके अलावा पति-पत्नी की अलग अभिरुचियों और आदतों की भिन्नता तथा सम्बन्धों का ठंडापन इसके कारण प्यार-मुहब्बत की जिंदगी कालांतरमें एक-दूसरे के लिये किस तरह नरक, कैद महसूस होने लगती है। इसका यथार्थ चित्रण अपनी कहानियोंमें किया है। शादी के बाद प्रेमी का पति रुपमें आनेपर उसमें होनेवाले बदलाव के कारण चिंतित होकर घुटनभरी जिंदगी जीनेवाली पत्नीका वर्णन अत्यंत सूक्ष्मतासे किया है। अपने पात्रों का मनोवैज्ञानिक पध्दतीसे वर्णन करनेमें वे रुचि लेती हैं। ममताजी अपने लेखन के बारेमें कुछ इस प्रकार विचार प्रकट करती हैं -- ` मेरे बारे में कुख्यात है कि मैं दाल बनाते-बनाते कहानी लिख डालती हूँ। मेरा विश्वास है कि कभी तेज लिखने की प्रतियोगिता हो तो मैं प्रथम आऊँ। विवाह के बाद जल्दी लिख लेना

मेरे लिए जरुरी भी हो गया है। फिलहाल जीवन का प्रधान भाव है, हड़बड़ी। बच्चे के जग जाने की, कॉलेज पहुँचने में देर हो जाने की, नल चले जाने की, दूकाने बंद हो जाने की, मेरा समस्त साहित्य इसी हाय-हाय के बीच से गुजरा है।"[१] इसकी प्रचिती हमें उनका साहित्य पढने पर आती है।

(३) उपन्यासकार --

कथा लेखन के बाद ममता कालिया जी ने अपना ध्यान उपन्यास की ओर केन्द्रित किया। लेकिन उपन्यासके वस्तु का विषय भी उन्होंने महानगरीय जीवन में शिक्षित मध्यवर्गीय नौकरीपेशा नारी तथा पति-पत्नी के प्रेमहीन सम्बन्धों को ही रखा। उन्होंने अपने लेखन का केन्द्र विशेष रुपसे भारतीय नारी के परिवेश के इर्द-गिर्द ही रखा। आज के समाज के मानस में कुंवारेपन की धारणा अथवा पति-पत्नी के विभिन्न दिशाओं में चलने के कारण गृहस्थ जीवन की अवधारणा ऐसे ही जीवंत तथ्य हैं, जो ममता कालिया की कथाओं को गति देते हैं। ममता कालिया के 'बेघर' और 'नरक दर नरक' ये दोनों उपन्यास पति-पत्नी के प्रेमहीन संबंधोंपर आधारित हैं। ममता कालिया जी के अब तक चार उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं --

१ - बेघर - १९७१
२ - नरक दर नरक - १९७५
३ - लडकियाँ - अप्राप्त
४ - प्रेम कहानी - अप्राप्त

(१) बेघर - (१९७१) -

पति-पत्नी के शारीरिक सम्बन्ध को केन्द्र में रखकर लिखा गया यह उपन्यास आधुनिक समाज में पुरुष की संस्कारबध्द जड़ता और सन्देह वृत्ति को

---

१ गली-कूचे - रवींद्र कालिया - भूमिका से उद्धृत।

उधाड़ता है। 'बेघर' में ममता कालिया ने संजीवनी को कुंवारेपन की कसौटीपर कसा है। संभोग संदेह में बदलकर प्रेमी,प्रेमिका के संबंध को तोड देता है। परमजीत पढ़ा-लिखा होकर भी उसका विश्वास शरीर विज्ञान पर आधारित है। वह कुंवारेपन की परख चीख,पुकार और रक्तसे सम्बन्धीत रखता है। संजीवनी से संभोग करने के पश्चात् वह यह अनुभव करता है कि वह पहला व्यक्ति नहीं है। इससे, उसके जीवन का नशा चूर-चूर हो जाता है। लेखिका इस स्थितिका चित्रांकन करती हुई लिखती है --' वह दुर्घटनाग्रस्त आदमी की तरह सन्न बैठा रहा। संजीवनी को देख-देखकर वह चकित हो रहा था। वही लड़की थी,बिल्कुल वही पर कितनी अलग लग रही थी। इतनी थोडी दूर पर बैठे हुए भी वह मीलों दूर जा पडी थी।'[१] संजीवनी के साथ पहला होने का गर्व न प्राप्त होने से परमजीत रमासे शादी करके पहला होने के गर्व की पूर्ति तो करता है लेकिन रमा जैसी कंजूस और फूहड लड़की से शादी करके निरंतर अजनबीपन और खालीपन के बोधसे टूटता चलता है और एक दिन उसका हार्टफेल हो जाता है। परमजीत के रूपमें एक साशंक पुरुष के तनाव और यातनाओं का चित्रण यहाँ किया गया है।

(२) नरक दर नरक ( १९७५ ) --

पूर्व उपन्यास की सफलता से प्रभावित होकर ममता जी ने 'नरक दर नरक' उपन्यास लिखा। इसमें पारिवारिक विघटन,गहराता हुआ असंतोष,बढ़ती हुई निराशा साथ ही नयी गृहस्थी की यातनाओंका विस्तृत चित्रण किया गया है। उपन्यास का नायक जगन , जोगेंदर , और उषा अंतरजातिय विवाह करते हैं। जगन कॉलेज में लेक्चरर है। गलत नीतियों का विरोध करने पर उसे नौकरी से निकाला जाता है। फिर वह प्रेस खरीदकर चलाता है और आर्थिक संकट से मुक्ति पाता है। चेहल्लुम के दिन मातम का जुलूस निकलता है। उस पर उसके पुत्र बबलूसे, अनजाने में पानी गिरता है जिसके कारण जुलूस के लोग उसके प्रेस और सब सामान को जला देते हैं। जगन भी घायल हो जाता है किंतु उसे लगता है कि यह नुकसान

---

१ बेघर - ममता कालिया - पृ.७२।

उसकी पत्नी और बच्चे के समदा कुछ नहीं है। इस उपन्यास में आज की राजनीति,कॉलेज का भ्रष्ट व्यवहार तथा दांपत्य जीवन की नोंक-झोंक का भी सुंदर वर्णन मिलता है। उपन्यास होकर भी यह कृति ' उपलब्धि' कहानी से साम्य रखती है। ' नरक दर नरक' उपन्यास का कथानक और ' उपलब्धि ' कहानी का कथ्य एक-सा है। पति-पत्नी के प्रेमहीन संबंधों को तथा सुखी दांपत्य जीवन को यह उपन्यास उजागर करता है।

(४) बाल साहित्यिक --

ममता जी ने बाल-साहित्य के क्षेत्र में अधिक नहीं लिखा, लेकिन ' ऐसा था बजरंगी ' बाल उपन्यास लिख कर इस प्रांगण को स्पर्श जरुर किया है।

(५) नाटककार --

' रोना मना है ' यह नाट्य-संग्रह लिखकर उन्होंने इस क्षेत्र को भी स्पर्श किया है। लेकिन हर मुमकिन कोशिश करने पर भी यह दोनों कृतियाँ नहीं मिल सकी।

(६) अध्यापिका --

एक सफल कथा-लेखिका,उपन्यासकार तो वे हैं ही लेकिन इसके अतिरिक्त वे एक सफल अध्यापिका के रुपमें भी विद्यमान हैं। अपने इस अध्यापन के कार्य को वे लेखन से पहले महत्व देती हैं। बहुत ही लगनसे वे अपना यह काम निभाती हैं। इन्होंने दौलतराम कॉलेज, दिल्ली और श्रीमती नाथीबाई ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय,बंबई में प्राध्यापक का काम किया है। यहाँ वे एक सफल अध्यापिका बनी हैं।इलाहाबाद आने के बाद भी उन्होंने अपना अध्यापन का कार्य नहीं छोडा। आज-कल वे महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज,इलाहाबाद की प्राचार्या हैं। ममता जी के व्यक्तित्व के इन पहलुओं को देखने पर यही कहा जा सकता है कि आधुनिक हिंदी साहित्य में इस प्रकार का सहज मेधावी नारी व्यक्तित्व दुर्लभ है।

क) कृतित्व --

ममता जी ने कविता, कहानी, बाल-साहित्य, उपन्यास लिखकर पाठकों को अपने कृतित्व का परिचय दिया है। लेकिन उनका यह साहित्य सृजन कब, कैसे और किस प्रेरणासे शुरु हुआ यह जानना भी जरुरी है।

(१) साहित्य सृजन की प्रेरणाएँ --

साठोत्तरी कहानीकारों ने भारतीय परिवेश में आये परिवर्तन, उसकी यथार्थ स्थिति, पीडा, घुटन, तनाव और टूटते हुए पारस्परिक एवं पारम्परिक मूल्यों को प्रस्तुत किया है। ममताजी भी इनमें से एक हैं, जिन्होंने अपनी मेधावी बुध्दि के जरिये अपने परिवेश के इर्द-गिर्द ही कथानक को ढूँढ कर अपने साहित्य में सँजोया। कॉलेज में बी.ए.में पढ़ते वक्त कविता लिखकर इन्होंने अपनी लेखन-यात्रा आरंभ कर दी। इस कविता को सभी की ओरसे सराहना मिली। इस कारण उन्हें और लिखने की प्रेरणा मिलती गयी। अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए उन्होंने लिखना शुरु किया। `लेखनद्वारा विचारों की अभिव्यक्ति न केवल गुजर-बसर का वरन, जीवन को सही अर्थ देने का सशक्त माध्यम हो सकता है। इसके जरिए अपना सोच, समाज के आगे रखा जा सकता है।' [१] इसी कारण ममता जी की कहानियों में उनके अपने विचारों की छबी दिखायी देती है। रवींद्र कालिया जी के अनेक मित्र साहित्यिक ही हैं, जैसे - उपेन्द्रनाथ अश्क, डॉ.नामवर सिंह, मार्केण्डेय, कमलेश्वर, ज्ञानरंजन। इन सबका कालिया दम्पत्ति के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है। घरमें हमेशा साहित्यिक वातावरण बना रहता है। इनसे अगर ममताजी प्रेरणा न पाती तो ही आश्चर्य।

साहित्य सृजन में उनके अध्यापकीय जीवन का भी बहुत योगदान रहा है। महानगरों में रहने के कारण महानगरीय जीवन के बारे में, उनकी समस्याओं के बारेमें वे बहुत कुछ अभ्यस्त थीं। ममता जी इसे पाठकों के सामने अभिव्यक्त करना

---

१ माया - १५ सितंबर, १९८९ - जिजीविषा - ममता कालिया - पृ.१२।

चाहती थी। अध्यापिका होनेसे विविध वर्ग की स्त्रियोंसे,युवतियोंसे हमेशा संपर्क स्थापित होता चला गया जिसके कारण उनकी समस्याओंको समझ लेने का मौका मिला। ममताजी स्वयं भी नौकरी करती हैं इसलिए अपना अनुभव साथ ही अपने सहयोगी स्त्रियों के अनुभव भी उन्होंने जुटाये। इन बातों को ध्यानमें रखते हुअे, तथा उनसे प्रेरणा पाते हुए वे आगे बढ़ती गयी। अपने अनुभव तथा परिवेश के किसी घटना इन दोनों को एक ही साचे में ढाल कर वह साहित्य सृजन करती है। इस बात को ममताजी ने डॉ.साधना शाह को बताया हुआ यह तथ्य स्पष्ट करता है -- अनुभूत सत्य और स्वानुभूत सत्य दोनों ही साहित्यिक कृति में आंशिक रुप में विद्यमान रहते हैं लेकिन आप उँगली रखकर पहचान नहीं सकते। मैं जब निजी तौरपर लिखती हूँ तो दिमाग में कोई धुँधली-सी घटना जो कभी आपके साथ घटित हुई हो, वह रहती है, कभी कोई धुँधला-सा चेहरा जो कि बहुत प्रिय लगा हो,वह दिमाग में रहता है और कहानी जब पूरी होती है तब हम पाते हैं कि उसमें हमने कितना कुछ अपना दिया है, उस चेहरे को हमने बहुत कुछ अपना व्यक्तित्व दे दिया है।"[१] इसकी प्रचिती उनके साहित्य में मिलती है। ममता जी साहित्य सृजन के लिए किसी विशिष्ट समय या विशिष्ट स्थिति में ही लिखती हैं ऐसी बात नहीं। इस बारे में उन्होंने डॉ.साधना शाह से कहा था कि -- जब समय मिलता है और बच्चा सो जाता है तब उस समय मैं अखबार के कागज पर भी लिख देती हूँ और किसी भी स्थिति में लिख देती हूँ और अगर मुझे जब नींद नहीं आती है और जब लगता है कि सब सोये हैं और यह बहुत अच्छा मौका है लिखने का तब भी मैं लिख सकती हूँ। मेरे साथ कोई भी ऐसा आग्रह नहीं है,जिसको मैं लेखन के साथ जोडूँ।"[२]

(२) लेखन का विकास --

ममता कालिया का लेखन विशेषरुपसे भारतीय नारी के परिवेश के इर्द-गिर्द घूमता है। ममता कालिया का संपूर्ण साहित्य पढनेपर एक बात स्पष्ट होती है कि उनके लेखन में विकास होता गया है। पूर्ववर्ती लेखन की अपेक्षा वर्तमान

---

१ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ.साधना शाह - पृ.१४९।

२ - वही - ,, पृ.१४९।

लेखन में विषयों की बहुलता के कारण कलात्मकता एवं रोचकता निर्माण हुई है। ममता कालियाजी ने अपने लेखन में सामाजिक विभिन्न अनुभूति, समस्याओं को लिया है यह इस तथ्य के द्वारा स्पष्ट होता है - ' ममता कालिया उन कुछ लेखिकाओं में हैं जिन्होंने जीवन के बृहत्तर आयामों को स्पर्श किया है, बंधी-बंधाई सीमाओं को पार किया है।'[१] ममता जी ने अपने लेखन द्वारा साहित्य के सभी अंगों को स्पर्श किया है। उनका साहित्य इस प्रकार है ---

| | रचना | | प्रकाशन वर्ष |
|---|---|---|---|
| (१) कविता - | ' ए ट्रिब्यूट टू पापा अैण्ड अदर पोयम्स ' | | - १९७९ |
| (२) कथा-संग्रह - | (१) छुटकारा | - चतुर्थ संस्करण | - १९८३ |
| | (२) सीट नम्बर छह | | - १९७८ |
| | (३) एक अदद औरत | | - १९७९अप्राप्त |
| | (४) प्रतिदिन | | - १९८३ |
| | (५) उनका यौवन - अप्राप्त | | |
| (३) उपन्यास - | (१) बेघर - | | - १९७९ |
| | (२) नरक दर नरक | | - १९७५ |
| | (३) लड़कियाँ - अप्राप्त | | |
| | (४) प्रेम कहानी अप्राप्त | | |
| (४) बाल-साहित्य - | ' ऐसा था बजरंगी ' , उपन्यास , - अप्राप्त | | |
| (५) नाट्य-संग्रह | रोना मना है - अप्राप्त | | |

ममता कालिया जी का साहित्य देखने पर उनके लेखन साहित्य का विकास समझमें आता है और एक बात स्पष्ट होती है कि ममता जी ने कविता लिखकर साहित्य क्षेत्र में कदम रखा है। फिर भी धीरे-धीरे उन्होंने अपना ध्यान साहित्य के अन्य अंगों की ओर बढाया। हाँ! न सिर्फ बढ़ाया बल्कि वे उसमें सफल भी होती गयी। उनके कहानी लेखन के बारेमें अपना मत व्यक्त करते हुअे

---

१ हिंदी कहानी सातवां दशक - प्रह्लाद अग्रवाल - पृ.५४।

डॉ.वेदप्रकाश अमिताभ कहते हैं कि -- ' ममता कालिया की कहानियाँ ऊपरसे बहुत हलकी - फुलकी और रोचक लगते हुए भी अंतत: गंभीर आशयोंसे संपन्न लगती है।'[१] जिसे हम स्वीकृत कर सकते हैं। अपने लिखने की विशेषता के बारे में ममताजी ने डॉ.साधना शाह को बताया था कि - ' जब मैं लिखती हूँ तो हमेशा अन्तिम पृष्ठ से शुरु करती हूँ अपनी रचना-डायरी-या कापी या किसी भी चीज के या अखबार के अन्तिम पृष्ठ से शुरु करके पहले पृष्ठ पर आती हूँ और शायद वह इस लिए कि मैं सोचती हूँ कि जल्दी से जल्दी उसे समाप्त कर पाऊँ।'[२] लेकिन लिखने की यह विशेषता उनकी रचना को जल्दी समाप्त करने की आदतसे लेखन में आनेवाले अभाव को ही स्पष्ट करती है। ममताजी स्वयं भी इस अभाव को महसूस करती है और मानती हैं कि वह जल्दी में लिखती हैं ' यह एक मेरे अंदर हडबडी हमेशा रहती है, लिखने के समय भी कि मैं अपनी रचना जल्दी से जल्दी समाप्त कर सकूँ। वह शायद इसलिए कि मेरे पास समय बहुत कम रहता है और इस समय के बीच मुझे पता है कि और कोई जीवन की अनिवार्यता जो है,अचानक मुँह उठाकर सामने आ जाएगी। इसलिए मैं अपनी रचना को जल्दी समाप्त करने की कोशिश करती हूँ। इसलिए मैं अन्तसे शुरु करती हूँ ताकि वह जल्दी से जल्दी खत्म हो जाये। सृजन के बाद एक मुक्ति का एहसास होता है। मुझे किसी भी रचना से लगाव नहीं होता,हर रचना पढकर लगता है कि इसमें सुधार किया जा सकता था, अगर मैंने और धैर्य रखा होता तो इससे अधिक अच्छी रचना होती।'[३] ममताजी के इस अभाव पर पुष्पपाल सिंह भी प्रकाश डालते हैं। ममताजी के ' प्रतिदिन ' कहानी संग्रह की आलोचना करते हुए पुष्पपाल सिंह ने कहा था ' ... इतनी समृध्द अभिव्यक्ति,गहन अनुभव-वैविध्य और कहानी कहने की अपनी नीजी-सी सरल,सहज शैली के होते हुए भी इन कहानियों में एक सपाटता है। लगता है लेखिका अनुभव को रचनात्मकता में पकने और पगनेसे पहले ही प्रस्तुत करनेकी ' किसी जल्दबाजी ' में है। यदि ममता कालिया इस अभावसे बच सके तो कुछ

---

१ हिंदी कहानी के सौ वर्ष - डॉ.वेदप्रकाश अमिताभ - पृ.९६ ।

२ नई कहानी में आधुनिकताबोध - डॉ.साधना शाह - पृ.१५० ।

३ - वही - ,, पृ.१५० ।

कालजयी रचना दे सकती है।[१] इसकी प्रचिती हमें उनके साहित्य में मिलती है। और यह बात भी सच है कि उनकी हर एक कहानी से पाठक कोई न कोई आशय अवश्य पाता है। ममता कालिया स्वातंत्र्योत्तर कथा-साहित्य की समर्थ लेखिका हैं। अपनी समर्थ और चुटीली भाषाद्वारा प्रतिदिन की घटना पर एक सफल कहानी बुनना, अंत तक अपने पाठकों को बाँधे रखना ममता कालिया की सभी कहानियों का गुण है और यही उनके लेखन की सफलता है।

निष्कर्ष ---

इस प्रकार हम देखते हैं कि ममता कालिया का जन्म संपन्न परिवार में हुआ। महानगर में उनका अधिकतर जीवन गुजरा। वे उच्च विद्या विभूषित विदुषी नारी है। अध्यापन व्यवसाय को उन्होंने अपनी जीविका के रुप में चुना। साहित्य सृजन उनकी आत्मा की प्रवृत्ति रहने के कारण रवींद्र कालिया जैसे साहित्यकार से विवाहबध्द होने का उन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ। घर-परिवार के साहित्यिक माहौल में उनके रचनाकारने समय-समय पर विभिन्न विधाओं में हस्ताक्षर कर अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को बहुमुखी बनाया। उनका समग्र साहित्य नारी की घुटन एवं संवेदना से हमेशा प्रभावित नजर आता है।

---

१ समकालीन कहानी - रचना मुद्रा - पुष्पपाल सिंह - पृ.१५५।